' पचपन खंभे लाल दीवारें' उपन्यास की सुषमा के बहाने नारी विमर्श '

डॉ.बालाजी श्रीपति भुरे
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
शिवजागृति वरिष्ठ महाविद्यालय, नलेगांव
ता. चाकुर जि. लातूर (महाराष्ट्र)

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है, क्योंकि समाज की संपूर्ण गतिविधियों का चित्रण साहित्यकार अपनी रचनाओं के माध्यम से करते रहता है। वह जो कुछ समाज में देखता है, अनुभव करता है, उसे अपनी बुद्धि, भावना, कल्पना और शैली के आधार पर अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। हिंदी कथा साहित्य के अंतर्गत उपन्यास की बात हम करते हैं, तब उपन्यासकार अपने उपन्यास में मुख्य कथाओं के साथ-साथ छोटी-छोटी कथाओं को जोड़कर उनमें विविध पात्रों की सृष्टि करता है। अपने कथन के माध्यम से पात्र स्वयं का प्रकाशन करते रहते हैं। पात्र देश काल और परिस्थिति की सीमाओं में रहकर अपना मार्ग स्वयं निर्धारित करते हैं। ऐसे समय उपन्यासकार का दायित्व होता है कि वह पात्रों को अपनी इच्छा अनुसार बर्ताव करने की छूट दे, न कि वे लेखक की कठपुतली बने रहें। यहाँ उषा प्रियंवदा जी ने पात्रों की इच्छा के अनुरुप छूट देते हुए उसमें जीवंतता लाने का प्रयास किया है। उपन्यास के पात्रों को लेकर अगर देखा जाए, तो वे कभी कुछ अपनाते हैं, तो कुछ का त्याग करते हैं। कभी स्थिति का सामना करते हैं, तो कभी स्थिति से भागने का प्रयास भी करते हैं। उनके इस स्वयं के निर्णयों से ही उपन्यासकार उपन्यास का ताना-बाना बुनती जाती है।

आधुनिक कथा साहित्य के अंतर्गत महिला लेखिकाओं में से उषा प्रियंवदा जी एक चर्चित उपन्यासकार हैं, जिन्होंने अपनी रचनाओं में पात्रों के माध्यम से आधुनिक जीवन को रेखांकित करने का प्रयास किया है। उनके पात्र हमारे आसपास के, परिचित और सामान्य जीवन जीनेवाले लगते हैं। उनके संवादों से, आचार-विचारों से उनमें जीवंतता पाई जाती है। इसका सर्वोत्तम उदाहरण है उषा प्रियंवदा जी का 'पचपन खंभे लाल दीवारें' उपन्यास। लेखिका ने इस उपन्यास में सुषमा, सुषमा के माता-पिता, छोटे दो भाई, दो बहने और इसके साथ-साथ सुषमा की सहेली मीनाक्षी, मिस शास्त्री रोमा डेविड, कृष्णा मौसी, नील कश्यप, भौंरी तथा अन्य पात्रों के जरिये इस उपन्यास का ढांचा तैयार किया है। इन विविध पात्रों में से सुषमा, नील कश्यप, मीनाक्षी, कृष्णा मौसी, माँ आदि मुख्य पात्र हैं तथा अन्य गौण पात्र हैं।

सुषमा का चरित्र इस उपन्यास में नायिका के रूप में हमारे सामने आता है। वह उपन्यास के आरंभ से लेकर अंत तक संपूर्ण कथानक में छाई हुई रहती है। उसी से उपन्यास के अन्य पात्र प्रभावित होते हैं और उसी के इर्द-गिर्द सभी पात्र घूमते रहते हैं। उषा प्रियंवदा जी ने सुषमा के माध्यम से नारी के उस रूप को चित्रित किया है, जो आधुनिक काल में अपनी शिक्षा से, कानून की सहायता से हर क्षेत्र में अपनी काबिलियत दिखाती है, बावजूद इसके उसे पग-पग पर पुरुषों के या सामाजिक बंधनों के कारण घुटन की जिंदगी जीनी पड़ती है। ऐसी स्थिति में भी वह आज परिवार में बेटे के बराबर स्थान पा रही है। यहाँ तक कि बेटे से भी बढ़कर बेटी किस प्रकार अपने कर्तव्य और जिम्मेदारी को पूर्ण

करने में सक्षम है, इसे साबित करने का प्रयास वह कर रही है और उसमें उसे सफलता भी मिल रही है। इसका सर्वोत्तम उदाहरण है सुषमा।

सुषमा एक ऐसा नारी पात्र है, जो अपनी जिम्मेदारी एवं कर्तव्य को लेकर हमेशा सजग रहती है। अपने परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक न रहने के कारण वह परिवार की संपूर्ण जिम्मेदारी अपने कंधों पर लेती है। अध्यापिका की नौकरी करते-करते पूरे परिवार का पालन-पोषण वह करती है। भले ही इस जिम्मेदारी को निभाते-निभाते उसकी अपनी इच्छा-आकांक्षाएँ ही नष्ट हो जाए। होता भी वही है, तैंतीस वर्ष की आयु तक उसका विवाह नहीं होता, न उसके विवाह को लेकर माता-पिता चिंतित रहते हैं। ऐसे हालात में वह घुटन भरी मानसिकता को लेकर जीवन जीती रहती है। यहाँ सुषमा के माध्यम से नारी विमर्श पर चिंतन करने के लिए हमें उपन्यास की संपूर्ण घटना में सुषमा की मानसिकता तथा उसकी जीवनशैली को, उसके आचार- विचारों को समझना आवश्यक है। इसके लिए हमें यहाँ निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार करना होगा। जैसे -

उपन्यास की नायिका :-

नायक-नायिका के बिना किसी भी रचना की कथावस्तु आगे नहीं बढ़ सकती, न रचनाकार को कथावस्तु के माध्यम से अपनी उद्देश्य पूर्ति तक पहुंचना आसान होता है। किसी भी रचना में नायक, नायिका की उपाधि पात्र को तभी मिलती है, जब वह अपने कर्म से एवं आचार- विचारों से उपन्यास में चित्रित अन्य सभी पात्रों को प्रभावित करता है तथा रचना के सभी पात्र जिस मुख्य पात्र के इर्द-गिर्द घूमते रहते हैं, उसीसे संबंधित उनके क्रियाकलाप होते रहते हैं, तभी उस मुख्य पात्र को नायक या नायिका कहा जाता है। नायक-नायिका ही कथानक के केन्द्र में रहते हैं। वे अपने आचार-विचारों से पाठकों को भी प्रभावित करते हैं। इस दृष्टि से देखा जाए तो 'पचपन खंभे लाल दीवारें' इस उपन्यास में नायिका के रूप में सुषमा और नायक के रूप में नील कश्यप हमारे सामने आते हैं।

इस उपन्यास में नायक से भी अधिक नायिका सुषमा पाठकों के दिलों-दिमाग में छा जाती है। उपन्यास की नायिका सुषमा आधुनिक भारतीय शोषित नारी का प्रतीक है। मध्यवर्गीय परिवार की सबसे बड़ी पुत्री होने के नाते वह परिवार तथा परिवार के सभी सदस्यों के प्रति अपने कर्तव्य एवं दायित्व को भलीभांति पूरा करने का प्रयास करती है। सुषमा के चरित्र से उपन्यास के अन्य पात्रों में से कृष्णा मौसी, सुषमा की सहेली मीनाक्षी तथा सुषमा की नौकरानी भौंरी आदि पात्र प्रभावित हुए बिना नहीं रहते। ज्ञान, कर्मनिष्ठा, ईमानदारी, सेवाभाव की वृत्ति, अन्याय के प्रति आक्रोश, क्षमाशीलता, दूसरों के प्रति समता की भावना, स्नेह की भावना, शांत सय्यमी स्वभाव आदि नायिका के लिए आवश्यक गुण सुषमा में हमें दिखाई देते हैं।

जिम्मेदारी एवं कर्तव्य के प्रति सजग नारी :-

जीवन में मनुष्य हमेशा अपने अधिकारों को प्राप्त करने की इच्छा रखता है और इस अधिकारों की प्राप्ति के दौड़ में वह अक्सर अपने कर्तव्यों को भूलते जाता है। जीवन में जितना अधिकार महत्वपूर्ण है, उतना ही या यूं कहिए उससे भी कहीं आदि कर्तव्य महत्वपूर्ण होता है। अतः दोनों का अनुपालन करना ही मनुष्य का परिपूर्ण जीवन है। इस दृष्टि से देखा जाए तो उपन्यास की नायिका सुषमा अपने अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्य के प्रति भी सजग दिखाई देती है। सुषमा को अपने परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारी का अहसास है इसीलिए तो कृष्णा मौसी के कहने पर कि सुषमा कुछ अपने बारे में तू भी तो तो सोचा कर, भाई बहन किसी के नहीं होते सब अपने-अपने घर के होंगे आज की दुनिया में कौन किसका होता है तब इसका जवाब देते हुए सुषमा का यह कहना कि," इन सब को भी तो मदद की जरूरत है मौसी ! पिताजी को पेंशन मिलती ही कितनी है ? उसमें तो दो वक्त दाल-रोटी भी न चले। मैं भी अगर न करुँ तो किसके आगे हाथ फैलाएँगे ? लड़के को पढ़ाना है ही, सड़क पर तो आवारा घूमने नहीं दिया जाएगा।"1 इतना ही नहीं जब वार्तालाप में नील

सुषमा को कहता है कि तुम समझती हो कि मैं तुम्हें शादी के बाद नौकरी कर दूंगा तब सुषमा का नील को यह कहना कि," पहली बात तो नील यह है कि मेरी बहुत जिम्मेदारियाँ हैं। तुमसे तो कुछ भी छिपा नहीं है। पक्षाघात से पीड़ित बाबू, दो बहनें और भाई, सब मुझे ही करना है..."2 यह सुषमा की अपने परिवार के प्रति जिम्मेदारियों को व्यक्त करता है।

परिवार के प्रति प्रेम :-

आज के भौतिक युग में विकास की दौड़ में हर एक का अपने परिवार के प्रति प्रेम दिन-ब-दिन कम होते जा रहा है। लेखिका ने इस उपन्यास में इसी पारिवारिक प्रेम को उठाने का प्रयास किया है। सुषमा अपने परिवार का भरण-पोषण केवल अपनी जिम्मेदारी है इसीलिए नहीं करती बल्कि उसका अपने माता-पिता एवं भाई बहनों के प्रति अपार प्रेम ही उसे परिवार की जिम्मेदारी पूर्ण करने के लिए प्रेरित करता है। इसीलिए तो उसका अपनी कृष्णा मौसी को यह कहना कि," अगर मैं सबसे बड़ा लड़का होती, तो क्या न करती ? उसी तरह मैं अब भी करती हूँ। इन लोगों के लिए कुछ करके मन में बड़ा संतोष-सा होता है। अपने लिए तो सभी करते हैं, छोटे-भाई बहनों को कुछ कर सकूँ, उस योग्य भी तो पिता जी ने ही बनाया है।"3 यह परिवार के प्रति सुषमा के प्रेम को व्यक्त करता है। खास बात यह है कि आज के आधुनिक युग में जहां परिवार के प्रति बेटों की जिम्मेदारी होनी चाहिए, वही जिम्मेदारी आज बेटों से भी बढ़कर बेटियाँ बखूबी के साथ निभा रही है। यह परिवार के प्रति प्रेम उपन्यास के आरंभ से लेकर अंत तक सुषमा के हर आचार विचारों में हमें दिखाई देता है। अतः सुषमा हर युवक युवतियों के लिए प्रेरणा के रुप में उपन्यास में चित्रित हुई है।

असफल प्रेमिका :-

लेखिका ने इस उपन्यास में सुषमा को एक असफल प्रेमिका के रूप में चित्रित किया है। उसने अपनी 19 वर्ष की आयु में अपने पड़ोस के युवक नारायण से प्रेम किया था। बचपन से ही उसने अपने दिल में एक स्वप्न संजोया था जिसका केंद्र नारायण था। उसके साथ शादी को लेकर सुषमा की माँ ने वकील बाबू से भी बात की थी। लेकिन ," वह नारायण की शादी बड़े ऊँचे घर में करना चाहते थे। उनकी पत्नी ने सुषमा के लिए बहुत हठ किया ; पर वकील साहब ने नारायण की शादी कहीं और तय कर दी।"4 और यहाँ सुषमा का प्रेम का संजोया हुआ पहला सपना चूर-चूर हुआ। वह पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ अध्यापिका की नौकरी करते-करते अपने परिवार का भरण पोषण करने लगी। इस जिम्मेदारी में उसने अपनी आशा-आकांक्षाओं को भी भुला दिया। उसका जीवन एक वीरान सा बन गया था, ऐसे समय नील कश्यप नामक युवक ने उसके जीवन में प्रवेश कर खुशियाँ ला दी। पुनः सुषमा नील के साथ प्रेम के धागे में बंद गई। नील उसके साथ विवाह करना चाहता था लेकिन सुषमा के सामने परिवार की जिम्मेदारियाँ और अपना कर्तव्य था। वह अपनी बढ़ती हुई आयु से भी चिंतित थी। सुषमा की आयु तैंतीस वर्ष हुई थी और नील उससे कम आयु का था। इस बात को लेकर वह नील से कहती भी है कि," तुम्हारी अभी आयु ही क्या है ! मैं तुमसे इतनी बड़ी भी तो हूँ नील। हमारा विवाह कभी सफल न होगा। मुझे सदा यह विचार डसता रहेगा कि कहीं कोई, बहुत छोटी, बहुत सुंदर लड़की मुझसे तुम्हें न छीन ले।"5 इसी विचार ने और सामाजिक नैतिक बंधनों ने उसे नील से अलग रहने के लिए विवश कर दिया। इस प्रकार उपन्यास में सुषमा एक असफल प्रेमिका के रूप में हमारे सामने आती है। जीवनभर उसे अकेलेपन और घुटन में जीने के लिए विवश होकर रहना पड़ता है।

अकेलेपन से त्रस्त नारी :-

मनुष्य को अपने जीवन में कोई ना कोई साथी चाहिए। बिना साथी के वह अपना जीवन पूर्ण रूप से जी नहीं पाता। जहां किसी का भी साथ ना मिले, तो ऐसे समय अकेलापन मनुष्य के जीवन को दूभर बना देता है। उपन्यास में सुषमा एक मध्यवर्गीय परिवार की सबसे बड़ी बेटी है। परिवार की जिम्मेदारियाँ वह बखूबी के

साथ निभाती है। अपने परिवार के प्रति उसके मन में अपार प्रेम भी है, लेकिन उसके जीवन को लेकर न परिवार के माता-पिता सोचते हैं न भाई-बहन। ऐसे समय अकेलेपन की पीड़ा ने उसके जीवन को निराशा एवं कुंठा से भर दिया। वह चाहती है कि मुझे पूछनेवाला मेरे सुख-दुख में साझेदारी करनेवाला कोई न कोई चाहिए लेकिन उसके जीवन में ऐसा कोई नहीं मिलता। अपनी सहेली मीनाक्षी के साथ वह अपने अकेलेपन को दूर करने का प्रयास तो करती है, लेकिन वह पूरी तरह से सुख से नहीं रह पाती। ऐसे समय उसके जीवन में नील कश्यप नामक युवक आता है। उसने थोड़े समय के लिए ही क्यों न हो उसके जीवन का अकेलापन दूर किया था लेकिन उसके साथ भी वह विवाह नहीं कर पाती और पुनः अकेलापन लिए वह जीवन जीने लगती है। यही अकेलापन उसे पल-पल खलने लगता है, पीड़ा देने लगता है। अकेलापन कितना बड़ा कष्टदाई एवं पीड़ादाई होता है यह सुषमा के माध्यम से लेखिका ने पाठक के सामने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

जीवन के प्रति आस्थावान नारी :-

जीवन के प्रति आस्था ही मनुष्य को जीवन जीने के लिए प्रेरित करती रहती है। मनुष्य को हमेशा अपने जीवन में आस्थावान बने रहना चाहिए। उपन्यास में सुषमा भी एक ऐसी युवती है, जो अपने जीवन के प्रति आस्था को बनाए रखती है। अपने जीवन में बने अकेलेपन की पीड़ा से त्रस्त और निराशा से छाई मानसिकता के बावजूद भी वह अपने परिवार की जिम्मेदारी निभाना चाहती है। प्रेम की असफलता ने उसके जीवन को निष्क्रियता, निराशा, घुटनभरी मानसिकता से भले अस्थिर बना दिया हो, लेकिन वह अपनी टूटी हुई मानसिक ता में भी जीवन के प्रति आस्थावान दिखाई देती है। परिवार के प्रति प्रेम और उसपर हुए संस्कार ही सुषमा को जीवन के प्रति आस्थावान बनाए रखते हैं।

आत्मनिर्भर नारी :-

सामाजिक दायित्व का पूरी जिम्मेदारी एवं कर्तव्य के साथ निर्वाह करनेवाली सुषमा एक जागरूक युवती के साथ-साथ आत्मनिर्भर नारी भी है। उसे अपने कौमार्य का एहसास है, बावजूद इसीके माँ-बाप की कमजोर परिस्थिति के कारण उसकी शादी कराने में उन्हें असफलता मिलती है परंतु वह अपने परिवार के प्रति अपने दायित्व को निभाने में कहीं भी, कभी भी पीछे नहीं हटती। वह बड़ी मेहनत से पढ़ाई कर अध्यापिका की नौकरी प्राप्त करती है। अध्यापिका होने के कारण आर्थिक दृष्टि से वह आत्मनिर्भर होती है। वह नौकरी करते करते अपने छोटे भाई बहनों की आशा-आकांक्षाओं की पूर्ति करती है, साथ-ही-साथ उसके उज्जवल भविष्य को लेकर भी वह कल्पनाएं करती है। कौन सा भी निर्णय लेने के लिए वह कभी भी दूसरों का सहारा नहीं लेती। वह स्वयं सोच समझकर अपने फैसले लेती रहती है यही उसके आत्मनिर्भरता को व्यक्त करता है।

शोषित नारी :-

आज के शैक्षिक एवं वैज्ञानिक युग में भी शोषित नारी का रूप हमारे सामने आ रहा है। उषा प्रियंवदा जी ने अपने इस उपन्यास में सुषमा को एक शोषित नारी के रूप में चित्रित किया है। पढ़ी-लिखी लड़की अपने परिवार की जिम्मेदारी अपने कर्तव्य के साथ निभाकर भी परिवार और समाज में शोषित नारी का जीवन जीती है। परिवार की दृष्टि से अगर बात करें, तो परिवार की जिम्मेदारियों का बोझ लेकर चलनेवाली सुषमा थकान महसूस करने लगती है। उसकी आजादी के पंखों को बड़ी कुशलता के साथ काट दिया जाता है। जहाँ कॉलेज में अध्यापिका की नौकरी करने के कारण उसे आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त तो होती है, वहाँ दूसरी तरफ परिवार द्वारा उसका शोषण किया जाता है यह कैसी विडंबना है। यह उपन्यास पढ़ने पर एक चिंतक होने के नाते यह प्रश्न भी मन में उठता है कि जहाँ एक तरफ निरुपमा के संदर्भ में अपने कर्तव्य को लेकर

सोचनेवाली माँ दूसरी ओर सुषमा के प्रति अपने कर्तव्य का पालन क्यों नहीं करती ? सुषमा के साथ परिवारवालों का यह व्यवहार केवल पैसों का मात्र बनकर रह जाता है। यहाँ पर सुषमा को केवल एक पैसे कमानेवाली मशीन के रूप में माना जाता है। परिवार वालों को कभी इस बात का एहसास नहीं होता कि सुषमा की भी कोई आशा-आकांक्षाएँ हैं। परिवार की ही बात नहीं कामकाजी नारी के रूप में भी उसका महाविद्यालय में अपनी ही सहयोगी अध्यापिकाओं के द्वारा शोषण होता है। मिस शास्त्री जैसी अध्यापिका को सुषमा का होस्टल की वार्डन बनना जचता नहीं। इसीलिए वह रोमा डेविड जैसी अध्यापिका और कुछ छात्राओं के साथ मिलकर सुषमा के खिलाफ षड्यंत्र रचाती है। मिस शास्त्री का रोमा डेविड से यह कहना कि," प्रिंसिपल तक रिपोर्ट पहुँच जाए तो बस काम बना समझो। सर्विस का तो कांट्रैक्ट होगा, पर वार्डनशिप छोड़ने को तो विवश किया ही जा सकता है।"6 यहाँ तक मिस शास्त्री चुप नहीं बैठती बल्कि इससे भी आगे जाकर मिसेज राय चौधरी को समझाते हुए उसका यह कहना कि," हमें-आपको क्या करना है ? दो-तीन लड़कियों से प्रिंसिपल को चिट्ठी लिखवाना ही पर्याप्त है कि सुषमा वार्डन पद के लिए उपयुक्त नहीं। उसका आचरण अनैतिक है। प्रिंसिपल हम लोगों को बुलाकर पूछेंगी, क्योंकि हम लोग भी यहीं रहते हैं, तो कह देंगे कि देखा तो हमने भी है।"7 यह मिस शास्त्री के षड्यंत्र कार्यों को दर्शाता है। यह भी एक दृष्टि से सुषमा का मानसिक शोषण ही है।

स्वाभिमानी नारी :-

सुषमा का इस उपन्यास में एक स्वाभिमानी नारी का रूप भी हमारे सामने आता है। सुषमा ने बड़ी मेहनत से पढ़ लिखकर अध्यापिका की नौकरी प्राप्त की है परिवार का भरण पोषण करने के लिए यह नौकरी उसके लिए बहुत कीमती है लेकिन उसने कभी भी कहीं भी अपने स्वाभिमान को गिरने नहीं दिया। वह अपने इसी विचार को नील के सामने रखती हुई कहती है कि," निर्धन मैं भले ही रही होऊँ, पर स्वाभिमानी भी बहुत रही। जीवन में कभी-कभी ऐसे अवसर भी आए, जबकि मैं अपने शरीर के मोल से धन और आराम पा सकती थी। पर वह मैंने स्वीकार नहीं किया। एम.ए. करने के बाद मैंने एक प्राइवेट कॉलेज में नौकरी की। वहाँ के सेक्रेटरी नगर के पुराने रईसों में थे। उन्होंने किस वस्तु का प्रलोभन नहीं दिया मुझे, पर मैंने वह नौकरी छोड़ दी"8 यह सुषमा की स्वाभिमानी वृत्ति को ही व्यक्त करता है।

परिवार के प्रति समर्पित नारी :-

सुषमा का उपन्यास में चित्रित वह नारी रुप है, जो अपने परिवार के प्रति समर्पित है। वह बेटी होकर भी स्वयं को अपने परिवार के बेटे के रूप में देखती है। हमेशा अपने माता-पिता और छोटे भाई बहनों के बारे में सोचती है। जो कुछ करती है उनके लिए करती है। उसका यह समर्पण भाव देखकर उसकी कृष्णा मौसी कहती भी है कि, सुषमा तुम अपने बारे में कब सोचोगी ? किसी के भी भाई-बहन नहीं होते, स्वयं के बारे में स्वयं को ही सोचना होता है। तब सुषमा का कृष्णा मौसी को यह कहना कि," मैं जो करती हूँ, कर्तव्य समझकर नहीं मौसी, उनके प्यार में करती हूँ। मेरा तो मन होता है कि मेरे पास अगर और कुछ होता तो और भी करती... अगर मैं सबसे बड़ा लड़का होती, तो क्या न करती ? उसी तरह मैं अब भी करती हूँ। इन लोगों के लिए कुछ करके मन में बड़ा संतोष-सा होता है। अपने लिए तो सभी करते हैं, छोटे भाई-बहनों को कुछ कर सकूँ, उस योग्य भी तो पिताजी ने ही बनाया है।"9 यह सुषमा के परिवार के प्रति प्रेम और समर्पण भाव को व्यक्त करता है। यहाँ विशेष बात यह है कि आज के समय में जिस बेटों को परिवार का कुलदीपक समझा जाता है, जिम्मेदारियों का वाहक समझा जाता है, वे तो आज अपनी जिम्मेदारियों से विमुख होते जा रहे हैं। लेकिन उसकी जगह उससे भी दो कदम आगे बढ़कर बेटियाँ परिवार की जिम्मेदारियाँ बड़े कर्तव्य के साथ निभाती दिखाई दे रही है।

माँ के प्रति आक्रोश व्यक्त करनेवाली नारी :-

उपन्यास में सुषमा का जीवन एक ऐसी पहेली बनकर रह गया है कि जहाँ भारतीय संस्कृति में बेटी के घर का खाना न खानेवाले संस्कार से बंधे भारतीय माता-पिता भी अपनी बेटी सुषमा की नौकरी पर आधारित हो गए हैं। इतना ही नहीं अपने सारे परिवार के पालन-पोषण का बोझ भी वे बडी बेटी सुषमा पर डाल देते हैं। माँ को सुषमा की बढ़ती हुई आयु तथा कौमार्य दिखाई नहीं देता। उसके विवाह से वह कहीं भी चिंतित दिखाई नहीं देती बल्कि उससे छोटी बेटी निरुपमा के विवाह की चिंता वह हमेशा करती रहती है। उसका सुषमा के अरमानों का गला घोटकर अपने छोटे बच्चों के भविष्य के बारे में सोचना पाठकों को बड़ा विचित्र सा लगने लगता है। माँ जब निरुपमा को देखने के लिए आए हुए अतिथियों के सामने सुषमा के पद की गरिमा का बखान करती है, तो उसके मन ही मन एक प्रकार की कड़वाहट भी भरी हुई लगती है। माँ के इस रवैये को सुषमा भली-भांति पहचानती है। माँ का अपने बारे में उपेक्षा से भरा व्यवहार सुषमा को ठीक नहीं लगता। जब माँ निरुपमा को लड़के को दिखाने के लिए सुषमा के पास आती है और वहीं पर सुषमा की सारी और आभूषण निरुपमा को पहनाती है, जिसे नील ने सुषमा को दिया था। यह देखकर सुषमा नाराज होकर रिश्तेदारों के सामने सीधे-साधे वेशभूषा में कोई भी आभूषण पहने बिना आती है, तो उसे देखकर मां नाराज होकर जब कहती है कि तुम्हें देखकर रिश्तेदारों को क्या लगा होगा हाथ, कान, खाली रद्दी सी साड़ी पहनकर तुम बैठी हो। यह सुनकर सुषमा के मन का क्रोध प्रकट होता है। वह कहती है," तुमने मुझे बहुत सारा गहना गढा दिया है न, जो पहन लेती। तुमने तो पहन ली थी न भारी-सी जंजीर - बस देख लिया होगा उन लोगों ने।"10 यह सुनकर माँ उल्टा सुषमा को ही ताने देने लगती है कि तू फिजूल का इतना खर्च क्यों करती हो। भौंरी को निकाल कर होस्टल के नौकरों से काम क्यों नहीं लेती। होस्टल में कुर्सियाँ जो बनी हैं, वह घर में क्यों नहीं बनवा देती, जो कि नीरुपमा की शादी में काम आए। यह सुनकर सुषमा का क्रोध और भी बढ़ने लगता है और अपने मन की भड़ास निकालते हुए उसका माँ को यह कहना कि," जरा अपने दिल के अंदर झाँककर देखो कि तुमने मेरे लिए क्या किया है। मेरा आराम से रहना ही तुम्हें खटकता है। तुम शादी तय करो नीरू की, मैं अपने सारे गहने-कपड़े उठाकर दे डालूँगी। यही तो तुम चाहती हो।"11 यह माँ के द्वारा हो रही अपनी उपेक्षा के खिलाफ सुषमा के आक्रोश को व्यक्त करता है।

सहृदयी युवती :-

सुषमा एक सहृदयी युवती है। वह महाविद्यालय में अपनी अध्यापिकाओं के साथ स्नेह से पेश आती है। उसकी एकमात्र विश्वासू सहेली मीनाक्षी है जिसके पास वह अपने हृदय की सभी बातें व्यक्त करती है। वह अपनी नौकरानी भौंरी के प्रति भी अपनेपन की भावना रखती है। स्वाति के बारे में अपनी सहअध्यापिकाओं द्वारा लांछन उठाना उसे ठीक नहीं लगता अतः स्वाति के प्रति सहानुभूति व्यक्त करते हुए हैं उसके खिलाफ बोलनेवालों का विरोध भी करती है। वह कॉलेज तथा हॉस्टल की छात्राओं की समस्याओं को अपना समझकर उसे सुलझाने का प्रयास करती है। जहाँ एक ओर छात्राओं के लिए कड़क नीति-नियमों का आग्रह करती है, तो दूसरी ओर उनकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता का हनन भी नहीं करती। शास्त्री के साथ छात्राओं का षड्यंत्र में सम्मिलित होना उसे ठीक नहीं लगता उससे पीड़ित होकर अपनी पीड़ा नील को बताते हुए उसका कहना कि," मुझे दुख यह है नील, कि मैंने इन लड़कियों के लिए कितना किया। जब तक कि कोई बहुत आवश्यक न हो, मैं दंडित नहीं करती। उन्हें प्यार से समझाती हूँ, उनकी सुख-सुविधाओं का खयाल रखती हूँ और उन्होंने मुझे यह दिया...मेरे कमरे में झाँका..."12 यह सुषमा की छात्राओं के प्रति स्नेह को तथा अपने सहृदयी होने का प्रमाण देता है। छात्राओं के प्रति ही नहीं परिवार के सदस्य हो या अपनी सहयोगी

अध्यापिकाएं हो या नोकरानी हो सब के प्रति सुषमा के मन में स्नेह तथा अपनेपन की भावना दिखाई देती है।

आदर्श अध्यापिका :-

उपन्यास में सुषमा, मीनाक्षी, मिस शास्त्री, रोमां डेविड, मिसेस राय चौधरी आदि अध्यापिकाएँ हैं। इनमें से मिस शास्त्री, रोमा डेविड और मिसेज राज चौधरी अपना अध्यापन का कर्तव्य एवं जिम्मेदारी छोड़कर सुषमा के खिलाफ षड्यंत्र में लगे रहते हैं लेकिन सुषमा एक ऐसी अध्यापिका है, जो पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी के साथ अपना कर्तव्य निभाती है। उसका अपनी छात्राओं के प्रति स्नेह भी है। उसके इस कर्तव्य और कर्म को देखकर ही प्रिंसिपल ने उन्हें हॉस्टल के वार्डन की जिम्मेदारी सौंपी है। सुषमा छात्राओं को बहुत तन्मयता से पढाती है," वह कभी क्लास में नोट्स नहीं लाती थी। शब्द शब्दों में जुड़ते जाते और वाक्य अबाध गति से फिसलते रहते। लड़कियों की कलमें कागजों पर दौड़ती रहती और इतिहास में जीवन आ जाता। समय कैसे बीत जाता, इसका आभास किसी को न रहता।"13 यह सुषमा की अपने ज्ञान और अध्यापन के प्रति लगन एवं तन्मयता को व्यक्त करता है, जो एक अध्यापक के लिए अत्यंत आवश्यक है।

घुटन भरी मानसिकता को लेकर जीनेवाली नारी :-

समाज में अकेलापन मनुष्य का जीना दुभर कर देता है। अकेलेपन से उसके जीवन में घुटन की स्थिति आ जाती है। इस घुटन की मानसिकता से कहीं नारियां अपना मानसिक संतुलन भी खो जाती है। उपन्यास में उषा प्रियंवदा जी ने सुषमा के माध्यम से घुटन भरी मानसिकता को लेकर जीनेवाली नारी को प्रस्तुत किया है। सुषमा एक तरफ पारिवारिक जिम्मेदारी निभाती है, जो उसके लिए आदर्श है और अपनी इच्छा-आकांक्षाओं की पूर्ति करना यह भी उसके लिए एक यथार्थ है। इस आदर्श और यथार्थ के बीच पीसना उसकी नियति बन जाती है। सुषमा अपने परिवार का दायित्व उठाते-उठाते इतनी अकेली हो जाती है कि उसे कुछ भी अपना नहीं लगता। एक तरफ माँ तैंतीस वर्ष की आयु की सुषमा के विवाह को छोड़कर उससे छोटी बेटी निरुपमा के बारे में सोचती है। उसे हमेशा अपनी छोटी बेटियों की चिंता बनी रहती है। माँ द्वारा हो रही अपनी उपेक्षा से सुषमा को पीड़ा होती है। उसके जीवन में नील कश्यप नामक युवक के प्रवेश से खुशियां तो आती है लेकिन उन खुशियों को वह स्वीकार नहीं कर पाती। पारिवारिक और सामाजिक बंधन उसे नील से अलग रहने के लिए विवश कर देते हैं। उसका नील से यह कहना कि," नौ साल से मैं इस कॉलेज में हूँ नील, पर यहाँ लोग किसी को जीने नहीं देते। इसीलिए मैं तुमसे कह रही थी कि मेरी जिंदगी खत्म हो चुकी है। मैं केवल साधन हूँ। मेरी भावना का कोई स्थान नहीं। विवाह करके परिवार को निराधार छोड़ देना मेरे लिए संभव नहीं। मैंने अपने को ऐसी जिंदगी के लिए ढाल लिया है। तुम चले जाओगे तो मैं फिर अपने को उन्हीं प्राचीरो में बंदी कर लूँगी।"14 यह उसकी घुटन भरी मानसिकता को व्यक्त करता है। नील के जाने के पश्चात सुषमा यह सोचती है कि," नील के बगैर मैं कुछ भी नहीं हूँ, केवल एक छाया, एक खोए हुए स्वर की प्रतिध्वनि ; और अब ऐसी ही रहूँगी, मन की वीरानियों में भटकती हुई।"15 वह अपने जीवन में अकेलेपन से इतनी थक गई है कि अपनी सहेली मीनाक्षी के पास उसका यह कहना कि," आज से सोलह साल बाद शायद तुम अपनी बेटी को लेकर इस कॉलेज में आओ, तब भी तुम मुझे यही पाओगी। कॉलेज के पचपन खंभों की तरह स्थिर अचल..."16 यह उसके जीवन में आई घुटन भरी मानसिकता की त्रासदी को व्यक्त करता है।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार उषा प्रियंवदा जी ने पचपन खंभे लाल दीवारें इस उपन्यास में सुषमा को नायिका के रूप में प्रस्तुत किया है उसका चरित्र पाठकों के लिए उपन्यास के अन्य पात्रों की अपेक्षा उदात्त लगता है। सुषमा उपन्यास की कथावस्तु में आरंभ से लेकर अंत तक छाई हुई रहती है। अन्य पात्र उसके इर्द-गिर्द घूमते

रहते हैं और उसके चरित्र को विकसित करने में सहायता करते हैं। लेखिका ने सुषमा को एक आदर्श, स्वाभिमानी नारी, कर्तव्यनिष्ठ युवती, आदर्श अध्यापिका, असफल प्रेमिका, परिवार की जिम्मेदारियों का भलीभांति वहन करनेवाली नारी और साथ ही साथ घुटन भरी मानसिकता को लेकर जीनेवाली नारी के रूप में प्रस्तुत किया है। एक तरफ पाठकों के सामने उसका शोषित नारी का रूप सामने आता है, तो दूसरी तरफ एक आदर्श जिम्मेदारी और कर्तव्य को पूर्ण करनेवाली युवती का रूप भी सामने आता है। ये दोनों रूप सुषमा के चरित्र की ओर पाठकों को आकर्षित किए बिना नहीं रहते।

यहाँ सुषमा के चरित्र पर चिंतन करने के बाद हमारे सामने कुछ निष्कर्ष बिंदु आ जाते हैं। जैसे -

- परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारी और कर्तव्य को भली-भांति निभानेवाली नारी का रूप हमारे सामने आता है।
- एक स्वाभिमानी और आत्मनिर्भर नारी ही अपना, परिवार का तथा समाज का विकास कर सकती है।
- कितनी भी समस्याएँ आए मनुष्य को हमेशा अपने जीवन के प्रति आस्थावान बना रहना चाहिए।
- भले ही नारी कितनी भी सहृदयी हो लेकिन वह किसी के द्वारा हो रही अपनी उपेक्षा को सह नहीं सकती। यहाँ माँ द्वारा हो रही अपनी उपेक्षा के प्रति सुषमा का आक्रोश व्यक्त हुआ है।
- सुषमा के माध्यम से लेखिका ने समाज के सामने एक आदर्श अध्यापिका का रूप भी रखा है, जो समय की माँग है।

कुल मिलाकर उषा प्रियंवदा जी ने इस उपन्यास में सुषमा के माध्यम से नारी चरित्र पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। आज के संदर्भ में पढ़ी लिखी नारी की मानसिक दशा को पाठकों के सामने रखने का लेखिका का यह सफल प्रयास रहा है।

संदर्भ सूची :-

1) उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - पहला संस्करण 1962, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ.10-11
2) उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - पहला संस्करण 1962, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ.104
3) उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - पहला संस्करण 1962, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ.11
4) उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - पहला संस्करण 1962, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ.36
5) उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - पहला संस्करण 1962, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ.104
6) उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - पहला संस्करण 1962, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ.81-82
7) उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - पहला संस्करण 1962, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ.82
8) उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - पहला संस्करण 1962, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ.56
9) उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - पहला संस्करण 1962, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ.11
10) उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - पहला संस्करण 1962, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ.78

11) उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - पहला संस्करण 1962, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ.79
12) उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - पहला संस्करण 1962, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ.95
13) उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - पहला संस्करण 1962, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ.111
14) उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - पहला संस्करण 1962, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ.56-57
15) उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - पहला संस्करण 1962, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ.111
16) उषा प्रियंवदा - पचपन खंभे लाल दीवारें - पहला संस्करण 1962, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - पृ.100

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com